

द्वि
श्री

[illegible][illegible]

3

ॐ
श्री

निःसर्गनाकालमलुलविभुः॥ विगंगं॥ विगंगमलेः सर्वमजलविभाधनिः॥ सर्वमजलविभाधनिः॥ विगंगमलेः सर्वमजलविभाधनिः॥
विभुः॥ मलविगंगः॥ जय
कं स्वाहा॥ सर्ववृद्धवाधिः
स्वाहा॥ सर्वगथागनहृदया
ववलेकिगस्वाहा॥ वज्रवक्राध्वनिगस्वाहा॥ विष्णुनमस्तुगस्वाहा॥ महेश्वरवद्विगंगयस्वाहा॥ वज्रध्व

४

ॐ कालाय स्वाहा

कालाय स्वाहा॥ समरुका लाय स्वाहा॥ माधिरुजाय स्वाहा॥ पूर्णरुजाय स्वाहा॥ मलकालाय स्वाहा॥ माहग
धाय स्वाहा॥ यक्रीनी स्वा
हा॥ समुद्रगमिनी नी
हा॥ गिरिशायनी स्वाहा
विष्णुस्वाहा॥ गर्गहाविधीत्युः स्वाहा॥ गर्गसंधानिनीत्युः स्वाहा॥ कूलस्वाहा॥ ॐ स्वाहा॥ स्वः स्वाहा॥ हः स्वा

१८५ मृत्पृष्ठं धुनिवाचधिवाचधि। मानिनिमहामानिनि। मानधविधि। वलविचलविमल। विटि२टिनि२निति२
 निटि२निट्ग। धाविधि। घ
 १ कवसि। सवसि। ववसि।
 दहनियचनिःपाचनिःमर्द
 हिले२महामहिल। निगठ। निगठलं३। मर्दः। मर्दिनि२दक। चक। चकवाकिनि२कल२कलनि२भवविभा२वमि

१ सर्वथाधिहनधि। मृनि२रुति२रुतिनि२निमि२निमि२नि। गिलाकवर्चनि। गिलाकऊननि। गिलाकालाकऊनि२
 धागुकयवलाकिनि। वज्र
 दूरमीसगधसयविवाचं३
 थाधिरय३वऊवऊवनि२
 थलधुस्त्रहा३॥ सर्वथापविदाविधिसाहा३॥ सर्वथाधिहनधिसाहा३॥ गर्वसं३नधिसाहा३॥ सर्वगयू३रुयहनधि

ॐ
ह

धमहावादिमहास्त्रमहासंयमममर्दकभचतुष्टयसहस्रविनागसोयधिगुहकाधनिमार्गपथिर्मंदप्रीत्य
किगइरुमावानगर्षादुष्ट
बलिनिविर्सीकविबलि
चलस्वस्त्यनुममसगद्य
कपालामहस्त्रवधयकसनायनयसर्वहावीगीचसपूजिका॥००॥दृष्ट्यचङ्गनचङ्गपिगृहकुमुममाद्रिनिवीर्य

१७

धमजसागर्षीनेध्वर्यधवलनचमिहगा०सर्वनागा०स्वस्त्यनुममसगद्यविवावस्यसर्वसत्त्वानाकसर्वरूप
यडवायसीर्गायायासस्य
राजनमामुग०अथवृष्ण
वैशवाजजनानद०सर्वलो
ष्ठउर्वच०आकाशीनिधिगायहा॥गर्षादुष्टपुष्ट्यामिलोकनाथस्यसंमूर्ख॥स्याद्यथद॥वृष्ण॥वृष्णध्या

लुभनः लुभप्रापः वज्रधनः स्वाहा ७०॥ मस्मि लो कय विमस्मि वा पुनः स्वर्गपूर्वा । न त्ववना धिसक्तिः समाहि
 नो वरुगथमगन दवनवा रु मनः । गस्मादिदं न त्ववर्ष प्रविममगन सत्यन ०० हामु स्वस्ति ॥ इति निना
 ग्माह मृगं च ह्ये से गं आस्त्र य सो ग्माह मृनि ४ यत्ता विग ४ धर्म धन न समाहि क विद मृगन ग्माह न
 असीह ननः गस्मादिदं न त्व वरं प्रती नम न सत्यन ०० हामु स्वस्ति ॥ यत्तु र मिष्ट विधि वय का निर्गं । स
 ला सदान् रु न यो गवा रु कं । समाधि ना गं न समन विद्य गं वजा यम ना द्य मार्ग दर्शन गस्मादिदं न त्वव

७१
 ७३

११

वीपती नमगन सत्यन ०० हामु स्वस्ति ॥ अक्ष महा पूरं लस्त्रिय सत्ता ४ रणा गानि च त्वानियुगानि चैव । न दकि
 तीया सग नगी ना सहः विगाह पुनि पूरु ल १४ ह्य दानं त्वव नमहा रु ली वी जानि न्यस्मानि यथा
 सुखं ०० दं पती न वनः संधन तं मगन सत्यन ०० हामु स्वस्ति ॥ यत्तु पय का मनसा दृष्टन उय सै व मिः
 ग्माह मृगं च ह्ये से गं आस्त्र य सो ग्माह मृनि ४ यत्ता विग ४ धर्म धन न समाहि क विद मृगन ग्माह न
 मन सत्यन ०० हामु स्वस्ति ॥ स ह्यथा ग्मादिह दर्शन स्य १४ यत्तु ह्यि धायु गय किले ग्माह सत्ता य दकि विचि सिगा

७१
३

च. सीलं वरं दर्शनं मार्ग गात्र ॥ ॐ दंपती गवत संघ वरं मगन सत्यन ॥ ॐ हामु स्वस्ति ॥ न ज्ञातुं कुर्यात् किं विधीहि
यायेकं कायेन वाचा मनसा ध्यायेत् ॥ पद्मादनीयं सहस्रानवृत्ता गथा न दक्षिण हृदये न गयी ॥ ॐ दंपती ग
वत संघ वरं मगन सत्यन ॥ हामु स्वस्ति ॥ यत्थं दुर्कील ४ पृथिवी पृथिवी मिस्ति गात्र दुर्दिनं वायु सिने पकम्य १८
॥ नत्थाय मा ४ पूजल सक्ति संघय आर्य मार्गस्य वनस्य दर्शनं ॥ ॐ दंपती गवत संघ वरं मगन सत्यन ॥
हामु स्वस्ति ॥ यत्थं सत्या निविहा वयं किं गच्छी न पुरुन सुदनि ॥ काय पदान च मनस्य हृत्मान न ह्यं कष्टमव

धृवीनि ॥ ॐ दंपती गवत संघ वरं मगन सत्यन ॥ ॐ हामु स्वस्ति ॥ अत्रि यथा वायु वसाहिनः ॥ अस्ते ज्ञाने वरं यो मि स
त्वा ॥ तथेव संयाज न विषय का आदर्भ नीया किं हि वृद्ध पृथा ॥ ॐ दंपती गवत संघ वरं मगन सत्यन ॥ ॐ
मु स्वस्ति ॥ यत्थं गमा ४ यत्थं यत्थं वत्स वत्स सर्व सत्वा ४ सुखि नाह वरु सास्त्रा व मय वरं दव पूजं वृद्ध न म
य ॐ हामु स्वस्ति ॥ यत्थं गमा ४ यत्थं यत्थं वत्स वत्स सर्व सत्वा ४ सुखि नाह वरु सास्त्रा व मय वरं दव पू
जं धर्म न म सय ॐ हामु स्वस्ति ॥ यत्थं गमा ४ यत्थं यत्थं वत्स वत्स सर्व सत्वा ४ सुखि नाह वरु सास्त्रा व मय वरं दव पू

अ
६

संघनमस्य ॐ हामु स्वस्ति ॥ यानीरुतना नीसमागतानि सिक्तानि तस्मापथवाक्रीकः पूर्व शुभे जीभुगर्भे यज
सुदिवाचवागोवचवकुधः ॥ यन्नवसत्यनजिनाजिनाविः ससत्यवादी निषुनस्यनासि ॥ गन्नवसत्यन
ॐ हामु स्वस्ति ॥ मन्त्रकुसर्व
मुनपुमुगपाफः ॥ अमल ॥ अत्र
स्वाहा ॥ स्या यथद ॥ खज ॥ खजधाध ॥ उधाधनि ॥ सावधिपुतद ॥ विपुलपुतद ॥ सैकवनि ॥ विपायवनि ॥ सच्चसा

१६

धन ॥ वन्नवगवासव ॥ विल्लनि ॥ विषजमाययुयनि ॥ पूयगह ॥ स्वस्त्यकुममसगधपचिवाचस्यसर्वसत्यानाच ॥ सर्वरथ
पदवापसर्गायायास्यस्य ॥
हंसगमिनि ॥ मालिनि ॥ इल ॥
नवलमनि ॥ चधुलि ॥ वच
मानियचवा ॥ चिसुगगायध ॥ दलीतिनिर्मिग ॥ चैका मूनिनालीजनारुम ॥ गहीत्वायादिनासास्तारुवजममृमीयम

ॐ नमस्तु वाचनं श्रुतं तव नु ॥ १ ॥ हा वीती वगथा दो वी ग म य थं ग थ म् ॥ २ ॥ म् मु द र्द व नी दि वी र्द म् य म्
 म् ना प र्म ॥ १ ॥ नमस्तु वाचनं ॥ २ ॥ आ गु र्द स्य न्ना प र्द ॥ ३ ॥ सर्वा म य र्द व चा पि रु व त्व म् न म् भो म् धी ॥ वि म् भि वृ द्ध ग्
 ज न नि खि न ॥ ४ ॥ व ल न च ॥ ५ ॥ वि ष्व र्द स्य वा च न ॥ ६ ॥ व र्द य द्द स मा धि ना ॥ ७ ॥ क न का क्क स्य ह न न म् भि वा च न
 म् य म् ध व ॥ ८ ॥ सा क्क सि र्द स्य ॥ ९ ॥ वी र्द य र्द व त्व म् न म् भो म् धी ॥ १० ॥ सा य र्द य द्द ॥ ११ ॥ ख टा ख ट वि ख ट ॥ वि म् भि विल
 वा व ल ॥ व ल व न च ॥ १२ ॥ श्रु त नि र्द य सि र्द स्य ॥ १३ ॥ वा न ड पि र्द य ग ॥ १४ ॥ म् भि व म् भि ॥ १५ ॥ नि र्द य ॥ १६ ॥ सर्व व ग ॥ १७ ॥

२०

स्व ल्प नु म म स ग ध प नि वा च स्य र्द स्य ना ध ॥ १ ॥ सर्व व ॥ २ ॥ वृ द्ध प ल क वृ द्ध म् भि वृ द्ध ना ॥ ३ ॥ व का ष्व र्द य ॥ ४ ॥ व म् भि वृ द्ध ना ॥ ५ ॥
 म् य र्द स ना यी गी र्द स्य ॥ ६ ॥ म् य र्द स ना यी गी र्द स्य ॥ ७ ॥ म् य र्द स ना यी गी र्द स्य ॥ ८ ॥ म् य र्द स ना यी गी र्द स्य ॥ ९ ॥
 गु ॥ रि त्र नि व ज र त्ता नि व ॥ १० ॥ रि त्र नि व ज र त्ता नि व ॥ ११ ॥ रि त्र नि व ज र त्ता नि व ॥ १२ ॥ रि त्र नि व ज र त्ता नि व ॥ १३ ॥
 य न का र्द य र्द स्य ॥ १४ ॥ य न का र्द य र्द स्य ॥ १५ ॥ य न का र्द य र्द स्य ॥ १६ ॥ य न का र्द य र्द स्य ॥ १७ ॥
 नि र्द य ल ॥ क न ग ॥ रि त्र नि ॥ सा व नि ॥ सा नि ॥ प्र सा नि ॥ सा हा ॥ धा व धि र्द स्य ॥ १८ ॥ ग म् भि र्द स्य ॥ १९ ॥ य ल क्क नि र्द स्य ॥ २० ॥ सर्व व

४
१

स्वार्थकृत्वा ता उद्धृदनि स्वाहा ॥ ॐ मे मनुयदे ॥ मम सगय विवाचस्व सर्व सत्वाना च सर्व का स्वादवगा णवधीम
नु विषया गा ॥ सर्व दवे
जिन गजसा ॥ अह गा च ववी
च नि नू दत्य का थ य स्य ध
र्य ल भ गे ड गा विषय लो कया लाना मरु धन वत्तन च से ना य नी नी सी र्य ल हा नि त्या भ्य स मृ दि ना वी र्य ध ग ड सा

२१

गजसा नपी विषम ह्य विषम सा ॥ गय मनुय दारु क्रि नि विर्या विष दूय का ॥ आ य थ द ॥ ह नि क सि न क च सं र हिर ॥
अमले ॥ अमुन ॥ कटक ॥ क
हिल स्वाहा रो मेल स्वाहा ॥
रुव गि सफ मी ॥ बाणा द्वय
बाणा द्वय भव मा रु भ्र व ग ला क गु या विषा ॥ नि विषा रु ग वा द र्मा ध र्म स्य रु नी विष र वा गा द्वय भ मा रु भ्र व ग ल

गच्छतस्वैते धुवर्षुष्य गच्छन्तु ॥ सवी ॥ उद्धृष्टीर्गपिरुवय गच्छन्तु ॥ डि ॥ स्वाया धिचिचर्षीय गच्छ ॥ न गच्छ का
 निय गच्छ ॥ किं विदय गच्छ ॥ मय विम नय गच्छ ॥ समय दवा र्म म गच्छ ॥ धा र्म विम नय गच्छ ॥ न मा म्भु नय गच्छ ॥ न ग
 वनाय न मा म्भु नय गच्छ ॥ सकाम नय ॥ सत्य प्रीति स्या य पञ्चाय मा त्र सं ॥ सर्व वका मा सरु लारु वरु ग ॥ म
 म स गद्य विवान स्य सर्व स
 कृमा नार्था हि ग क नी ॥ य र्म मी व गि क म विद्या स र्ग व म्मा ध निर्मि ग ॥ स फ धा स्य र्म र्म म्भु र्म क स्य व म म्भु

23

स्त्री ॥ स्या य ॥ थ द ॥ अ क्क न क्क र्म नि ॥ रु व न ॥ न न दि ॥ वि न दि ॥ म न ली ॥ गि रि ग व नि ॥ ग व नि ॥ स व नि ॥ ग व नि ॥ ला
 व ॥ ल स न ॥ अ ल र ॥ अ क्क न
 या ग र्म स्य र्म वि मा र्म रु मा
 स्य गि अ क्क मा ग र्म स र्म
 म हा वा धि ॥ वा धि व म ग र्म रु मा र्म रु मा र्म रु मा र्म रु मा र्म रु मा

थ
ह

बसा॥ सर्वराजनसंस्वरसंसेस्वरैकवाकुम॥ छिन्नदन्वंमथासुर्गनादभीस्वगयनः॥ गथाराजनसंस्वरंमर्मस्वरं क
वाकुम॥ स्याद्यथार्थ॥ खख
ममसगभयविवावस्यसर्व
थासुर्गःसर्वैकवकुनादभी॥
॥विषांभिवृद्धभरतीमयेमिसिखिनचक्रुहसुगर्गवविलुडु॥ कुरुकुरुदुर्वकनकमूर्तिवकाभ्यर्घ्यविभजदभा॥

२७

यस्यनिष्कृष्टगोमर्मातनान्मजावनवारुमान्नीयथोपगलेष्वभीवीरपूजा॥ कायनतर्षीमनसावदृष्टप्रसन्नविर्लस
वधोपमोमिन्नतपुवृद्धपुम
भक्ति॥ कश्चिर्वचनित्यं॥ ख
वान्नीरुमवास्तुहिक्रवाः
नीनाममहाविद्यागह्नीसमाफ्म॥ ६४॥ ॥ ॐ नमोरागवर्ध॥ श्रयमहामायूय॥ १॥ ॐ नमोरागवर्ध॥ श्रयमहामायूय॥ १॥ ॐ नमोरागवर्ध॥ श्रयमहामायूय॥ १॥

५
७

नललल।नागललल।इय२विजय२थस२गु२२इवजिनवजिनिअगल१वलामला।००लिमला।गिलिम
ला।००लिमिह।गिलिमिह
मला।००दिविहिदिवि
कुदव१सम१नदमसेदि
यथेविशवाह१॥गयथ॥कृकृकृकृ॥३॥इलूकृलूकृलू॥३॥नागललल।इमलललल।नलललल।नागललल

२८

ल१इय२विजय२थस२गु२२इवजिनवजिनिअगल१वलामला।००लिमला।गिलिमला।००लिमिह।गिलिमिह।	००लिमिह।इम२इम२मास२गल२वावला॥चला।चपला।विमला।००दि
विहदिवि।विहदि।नमा	वृक्षनीविवि।कसि।गमदाहिकानी।नमाहगी।हालमलववर्षकुदव१सम१न
दमसदिमास२नमावृक्ष	नीस्वाहा।नमावृक्षाय।नमाधर्माय।नम१संघाय।नम१सर्ववृक्षवासायमय
नवाह१।नमामहामादय१विशवाह१गयथ॥मिह१सलिह॥ननि।माकनि।मूकविमूक१अमलविमल	

५३

निर्मलाश्रुतुमिषधुमनजलमानलयाहि मयि नयनार्हा वननयनरुदराह रुद। समनरुदराशी रुद
सर्वथसंधिधाममममव
मानसि। अमुग। अमुग
ला। अमुग। अमुगवर्षाधि
वनि। शी रुद। चय। चय
सर्गसर्गका कवीमरुय। सर्वधु। वप्रधायाविमरुक्ष। सर्वथापतिहग। वदरमहि

२६

ल। अने माहिल्या वर्ष दुदवा समकनन सउख हा सर्व मम मकन। ना नाय धो पा नाय धो। ह बिना लि। कुं गालि। वृं गालि
 वृं लि मि मि कि लि मि मि। किलि मलि मदी॥ वृं लि मि मि धु पा मि ज म नु प दा ॥ न य ध ॥ हिलि
 मिलि। विलि मिलि। किलि मिलि। कडु मूल। सस इ म मं। व स इ। व व व। व स लि लि २ व द बि लि २ व द बि
 लि स व ल। इ म्वा। उं व २ दु डं व पी र्यं क न। आरुं वी प बि व ड। व व व दु द वा। न वा द
 कन स म कन र न मी ल ग व न वृं ति द या वृं दु ग। मि मि का य। रु जा नि का य। आ स ना पा स ना पा प नि क लो क पि

ल
दि

निहर्षविषी। सर्वदृष्टदृष्टानी। दृष्टविषमूलविषी अन्नविषी। यानविषी। सर्ववृद्धानी। नञ्। सन् २० क्वच २० क्वच २० क्वच २०
विहि २ हिचि २ विचि २ रुगं विषी। निहर्षविषी। नास्ति विषी। सफानी मम्य सवृद्धानी सप्रावक संघानी। मञ्जु
ना। पला मला। ०० लिमला गिलि २ मला। गिलि मला। निहृह। गिलि मा गि मा इ मा २ विमा धि मा। धुस व
ला। क्व ला। सवृ ला। सवा उ वा। समुं वा। अठ ना। गिल क्व उ ना। ०० लि कि सि। समकात्रे व
मा सी द म मा सी गी म गी म सर्व सख वृ च। वृ द्। सर्व विधि। वृ द विधि। वृ स द् वृ द विधि। वृ द विधि २ क्व व द्। क्व व द्

३२

कमला ०० गितव व उं वर पिरी क वा। आवट ग विव द् व म वा द क न व र्ध कु द व २ म म र्द नान मा र ग व म। ०० द ला मि
सि का य ०० र्गि द्रा य ला दा हि का य। र ट ऊ वि का य। अ व ग वं वं ग वा। अ द न द वृ द् स आ स न या म नं या य नि क्व
ले स मि क्व ला। न मी र ग व ल्य वृ द्दानी स्वाहा। अ म क मा ल्य डि न वि य मी सि र्वी डि न ४ पु हुरी क स्य मू ला। स
व स्य मू लं उ प ग म्य वि ष्व। उ कि री पु मू लं क र्व क्व द् वा म म ४। वि ष्व काना म मू नी उ द् म् व न य र य म धः
मू लं उ प ग म्य का ष्य य ठा अ ष्य क्क मू लं मू नी सा य पु र्ज न उ प य वा धि स म वा य र ग म मी र ग वृ द् व म ह र्दि कः

ल
ह

पूयादवगाः सकि श्रुतिपमनाः मादवगामदिनमना उदगाः श्वर्षकुभाकिश्रुतिवचनित्यं गयथा ॥ कलि
मिलि। किलिविलि। कलि वलिचालि। उदगा। सइमादवसवशइ हकन। उ। कनउमूल। कनिसः
नगाः कनिसवगावू कलि कनिलि। नगायति। योनायति। यम्यति। यम्यपम्यति। कपिलवाकुनि
वसि। कलिवासिधुशः मिथनिमकुयदानिस्वाहा ॥ गयथा ॥ कीर्तिमूल। पुनमूल। जलमूल। वः
वधुमूल। समकमूल। नउनाउ। अउनाउ। अइनइ। कुमनइ। अउनाउ। कुमनाउ। कनिसिह। माव ॥

३३

कमूल। कनिसववैरुवैरुषियकनै। आवइ। पविवइ। नवाइकं। नववइदवइसमकनानमाहगवगं ॥ क
उगा। मिमिकाय। कनिसिह। यल्लायाहिकायाहकाविकाया। कनिसववैरुवैरु। अइनइ। वूनइ। आसन
याजनपापनिवूलापनि वूलानमाहगवत्यवूजानास्वाहा ॥ अलमकमाहत्यजिनाविपस्वीसिह
जिनैपुषुवीकस्यमूल। उयगम्यविष्णुकुसिरीयमूल। वदकदमवाहमहा। वदकदकानाम
मूनी उइम्वनयग्राधमूल। उयगम्यकासापश। अस्वल्मूल। मनीमाधपंगल। उपत्यवाधिसमवाय ॥

लेख

२ गोगमी वन पूर्व द्वय म हर्षिक पू या दवनां स नि अरि प स त्ना ठ गा द व ता मू दि न म नो उ द श्वा ४ वूर्व तु षा मि
 कृ भि व च्छ नि त्वा ग य
 व र दू दू व र उ श क च
 य धि प म्भ नि प म्भः
 नि स्वा हा ॥ ग य थ ॥ की र्ति मू लं व र मू लं व ल मू लं व व धु मू लं स म न मू लं व न उ ना ठ ॥ अ द न दू व म न दू

३४

अ उ ना उ द म नो अ व र्ण मि र्ण र या व र अ व उ का म व उ का व र्ण लि कि सि वि लि कि सि व र्ण लि कि वि लि
 ला दा हि ना उ दू दू मा
 लि वा मु व हु षा द स्वः
 धा दि नो मि त र स्व लिः
 न म ग वि र्ण स मा नु य क ६६ ५५ धा मि वि ष इ य ती स र्व दि व स क ल्या ना ४ स र्व न कृ ग र उ का ४ स र्व म र्दि का व द्वा ४

五

[illegible]

३६

[illegible]

ल
७

सत्त्वानां च स्वाहा ॥ स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति ॥ ४ ॥ मम सर्वसत्त्वानां च स्वाहा ॥ नमः ॥ ह नं स्व नं स्व नं स्व नं स्व नं मि
मूलं मयं किं मयं मयिः
मयि मयि मयि मयि मयि
हा ॥ स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति
स्व नं मयं मयं मयं मयं
ल ॥ ४ ॥ मयि मयि मयि मयि ॥ ४ ॥ सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि ॥ ४ ॥ मम सर्वसत्त्वानां च स्वाहा ॥ नमः ॥ स्वास्ति स्व

३६

स्वस्ति स्वस्ति ॥ ४ ॥ मम सर्वसत्त्वानां च स्वाहा ॥ नमः ॥ ह नं स्व नं स्व नं स्व नं स्व नं मि
क ॥ रुल रुल रुल रुल रुल रुल ॥ १० ॥ लल लल लल ॥ ४ ॥ मयि मयि मयि मयि मयि ॥ सि
दि सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि ॥
ना च स्वाहा ॥ नमः ॥
रुल रुल रुल रुल रुल रुल ॥ १० ॥ लल लल लल ॥ ४ ॥ मयि मयि मयि मयि मयि ॥ सिद्धि सिद्धि सिद्धि सिद्धि ॥ ४ ॥ मम सर्वसत्त्वानां च स्वाहा ॥ नमः ॥

५३

क
दि

[illegible]

४२

[illegible]

५
६

धिगावधुतयानशस्त्रस्त्रिदङ्कशुकिटिमर्गदलकृष्टगणुपिठकयामावेसर्पलाहर्निगतयानशस्त्रस्त्रिद
वाग्यशस्त्रस्त्रिदविषय ४स्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिद
सर्वमहाबाहुसर्ववृद्धादि सकुवशानमासुवृद्धायनमासुवृद्धायनमासुवृद्धायनमासुवृद्धायनमा
सुभाकायनमासुभाका यनमासुविमकायनमासुविमकाय ॥ यवाङ्गलावाहिगपापधर्मीयवस्त्रि
गासत्त्वहिनायनिर्या ॥ शुक्लवगाङ्गनिसमाधियकासुवाङ्गलाकावयिर्दुसमर्थास्त्रिदस्त्रिदस्त्रिदस्त्रिद

४३

वस्यसर्वसत्त्वानाशयविपालयनुत्वाहा ॥ तथथा ॥ अठ्ठ ॥ कठ्ठ ॥ मदमद ॥ मदवर्द्धन ॥ अवलमवव ॥ गुर्व
धुर्व ॥ गवव ॥ पर्व ॥ गव
खर्व ॥ विखर्व ॥ हिलि ॥
याईव ॥ हिलि ॥ कवि ॥
व ॥ खर्व ॥ रुल ॥ रुलिनि ॥ हल ॥ हलिनि ॥ दक ॥ दकिनि ॥ दकिल ॥ सकटि ॥ मकटि ॥ नट ॥ नटिनि ॥ सिनि ॥ सि

नूमादिनाच। अत्र दृष्टं लि

खानाहेका ४ स्वस्वयनकृतमर्वनकावृत्तावतुमुपि ४ पात्रे शर्षयविग्रहं ४

४१

प्राथकनंदकचलक

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ धनं सचरुनं रुद्रं रुद्रं रुद्रं रुद्रं रुद्रं ॥ हनी विषं निहनी विषं वृद्ध

फ
उ

मङ्गाहर्गविषं॥पुण्यकरुणमङ्गाहर्गविषं॥अहर्गङ्गाहर्गविषं॥अनागमिमङ्गाहर्गविषं॥सकृदागमिमङ्गाहर्गविषं॥	सत्यवादिमङ्गाहर्गविषं॥वक्त्रदधुमङ्गाहर्गविषं॥ॐशुक्लमङ्गाहर्गविषं॥विष्णु
जागोयन्नमङ्गाहर्गविषं॥	मङ्गाहर्गविषं॥वक्त्रदधुमङ्गाहर्गविषं॥असूत्रमायाहर्गविषं॥नागविद्याहर्गवि
वक्त्रमङ्गाहर्गविषं॥अग्नि	मङ्गाहर्गविषं॥महामायाहर्गविषं॥निहर्गविषं॥पुण्यासंक्रामकविषं॥स्वस्ति
मङ्गाहर्गविषं॥	मङ्गाहर्गविषं॥

४८

सागुरमूलविषागुरविद्याविषागुरवर्धुविषागुरदृष्टिविषागुरविश्वविषागुरमधसंकटविषागुरगर्वविषागुरमानुष	सागुरसर्पमृषिककीटतूटकवधारमधुकमृकिकागुमत्रवचटिकागुमृकगुला
विषागुरमृमानुषवि	गुराधिविषागुरस्वस्तिमर्वविषयमममगधयनिवानस्यसर्वसत्वाकै नोखा
टकविषागुरसंक्रविषा	लमासाऊकुलवायाटीऊकुलमथानियागतिगुसतिरिहिनिसिनिधिमि
हा॥गयथम॥ऊलाऊकु	
वधवीगमिह॥हाहाहाहाहा॥५॥सिंहधिमि॥विधिमि॥धिमि॥कुरसाधनरसाधनरधसम॥गुदगुदसे॥हिनिरेमि॥	

६
०

दलदलदासनिघातनि। माहनि। सुहनि। ईरुनि। स्वयं दुवस्वाहा ॥ तथथा ॥ हिवि २ खिवि २ भिवि २ सिवि २ सेलि २ हि
 लि २ मिलि २ मि २ वि २ उरु
 ऊरुनि सुं तनिये स्वाहा
 ऊरुयति न का गुयति ४ यः
 गुहा २ विलो २ दुरु २ ॥ ०
 समति। ईवूमति। मधूमति। कमलविमलं। वृधुले २ अतिनांति। अरिदुहि २ दिवकं वकं दूता वसना २ महा

५०

नगना। तुलवदुलवसुलवस्वाहा ॥ ० ॥ स्वयं महाविद्या ॥ नयनयामहामाचूय्यो विद्यावाह्य समसगधयनिवाचः
 स्वसर्वसुतानां कं व कां
 मस्वाहा ॥ वाग्मध्वस्य
 व ॥ माह्व २ गला कं
 लो कं य विद्या ॥ निर्वि
 गमस्य न कं न दू गं स्वस्वायनं मया ॥ ० ॥ दमवाच २ गवाना रुमना आयुमानानम आयुमाना स्वा गं हि दू यवग

इ
द्वि

[illegible]

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH164